समीक्षार्थ
8/3/97.

# बसन्त इहाँ आ ना सकल !

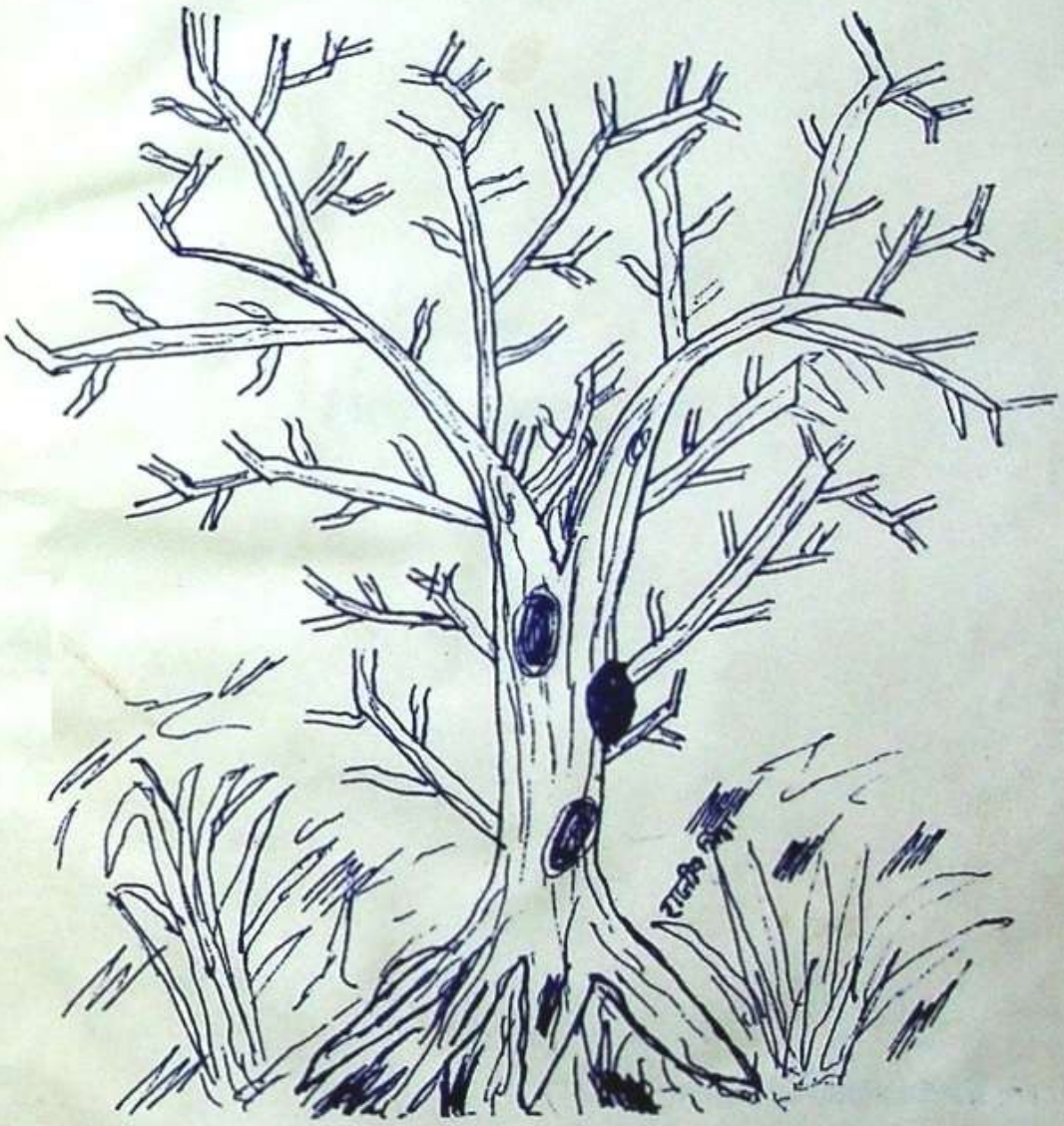

विश्वम्भर कुमार शर्मा

# बसन्त इहाँ आ ना सकल !

रचयिता
विश्वम्भर कुमार शर्मा

मूल्य :- रू. १०

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक के नाम : बसन्त इहाँ आ ना सकल
रचयिता : विश्वम्भर कुमार शर्मा
प्रकाशक : नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान
वीरगंज

२०५३ साल फागुन
प्रकाशित प्रति : ५००
सर्वाधिकार : लेखक में सुरक्षित

कम्प्युटर सेटिङ्ग
धर्मदेव जोशी

मुद्रक
प्रतीक प्रकाशन समूह प्रा. लि. (अफसेट छापाखाना)
श्रीपुर, वीरगंज-१४
फोन नं. :- ०५१-२३१०५, २२७०५

www.bhojpurisahityangan.com

# नेपालका माटी मे

साहित्य सिरजे के बडा सम्भावना बा। नेपाल के प्रकृति कविता के कोष बा। भोजपुरी कविता के छन्द में बन्हाईल भा निबन्ध भावधारा एह देश का भाव-ससार के अपना रचना मे उतार रहल बा।

कवि, प्रो. विश्वम्भर कुमार शर्मा, मैथिली क्षेत्र मे जामल, नेपाली के प्राध्यापक, आ भोजपुरी के सशक्त सिरजनहार का रुप में आपन पहचान बना चुकल बाड़न।

'इहाँ बसन्त आ ना सकल !' नामके सकलन कवि का भाव सोक के दर्शन करावे में समर्थ बा। ई कहल अधिक जरुरी बा जे शर्मा जी के शोधपरक निबन्धन लेखन से अधिक पहचान बनल बा।

इनका समूचा साहित्यिक सम्भावना का सार्थक आकार मिलो, एह खतिरा हम हार्दिक **शुभकामना** भेज रहल बानी।

डा. हरीन्द्र हिमकर
हिन्दी विभागाध्यक्ष
के. सी. टी. सी. कालेज, रक्सौल

www.bhojpurisahityangan.com

# भूमिका

एने कुछ वरिस से भोजपुरी साहित्य में कविताका दिसाई एगो क्रान्तिमय बदलाव आइल बा । नेपाल के भोजपुरी साहित्याकाश में प्रा. श्री विश्वम्भर कुमार शर्मा के नाम खास तरह से अंकित बा ।

श्री विश्वम्भर कुमार शर्मा भोजपुरी भाषी ना हई । 'नेपाली' के मातृभाषी आ प्राध्यापक भइला के बाबजूद भोजपुरी साहित्य में इहाँ के लगाव, समर्पण देख मन हर्षित हो जाला । 'भाषा ओकरे जे एके समझ बुझ सके' के कहनाम चरितार्थ हो रहल बा । अइसे त कविता गीत, कथा, निबन्ध सब लिखिलें इहाँ का, बाकी 'समीक्षा' इहाँ के मूल विधा ह ।

तुकवन्दी के चक्रव्यूह में विना फसले इहाँका कविता करिले । गद्य-कविता-लेखन मे इहाँ के आपन एगो खास अन्दाज वा ।

'वसन्त इहाँ आ ना सकल' उहे खास अन्दाज वाला कवितन के संग्रह हवे । ई इहाँ के भोजपुरी में प्रथम प्रकाशित पुस्तक ह । आजू के कवितन में सम्भावना, संवाद, सकेत, सन्दर्भ चित्र पावल सफलता के गुण मानल जाला । इ सब तथ्य इहाँ के कवितन में मिलल । समकालीन भोजपुरी कविता के काव्य वैभव संवाद मुद्रा विश्वम्भर कुमार शर्मा के कवितन के खास शैली ह ।

एह पुस्तक में 'कविता, एगो दोसर अभिमन्यु,' वसन्त इहाँ आ ना सकल, सम्पत्ति झापाली शहीद के याद में, का र हे (?), का कहीं (?), कहाँ बाहू (?), देवता, अलग पहिचान, आग सुलग रहल वा, जिनिगी, कर्त्तव्य, काजर, प्रेम, याद आ

www.bhojpurisahityangan.com

अबगे सूरज उदाइल बा नामके सत्रह गो कविता सग्रहीत बाडी सन ।

हरेक कवितन के पढला के बाद मन कुछ सोचे पर विवश हो जाता । कहीं 'कविता' के खोज में कवि भटक रहल बा, आ भटकते-भटकते रिक्सा चालक के टिविआह खून, किसानके हाथ के फोडा आ गोरीपन के फाटल बेमाय में चलि जाता त कही आपन अलग महिचान बनावे के क्रम मे नेपालके इतिहास के पन्ना मे लीन हो जाता, कहीं 'प्रेम' के र स मे डूबकी लगावे लागता त कहीं याद बनके चिता पर चलि जात बा । शहीदन के याद करत आँखि का कोर भीज जाता, त देवता के खोजत मन व्याकुल हो जाता । ई सभ भइला के बादो कवि हारत नइखे । 'जिनिगी' के कदम मे कदम मिला के आगा बढि रहल बा ।

नेपालीय भोजपुरी साहित्य मे 'वसन्त इहाँ आ ना सकल' आपन विशिष्ट स्थान बना पाई, ई उमेद राखल जा सकत बा ।

प्रा. विश्वम्भर कुमार शर्मा सें भोजपुरी के काफी अपेक्षा बा । इहाँ के कलम एहू से बढियां बढिया पुस्तकन के रचना कही ई सहज विश्वास बा ।

एह पुस्तक के प्रकाशन पर हमर हार्दिक बधाई स्वीकार करीं ।

**गोपाल अश्क**

सदस्य सचिव

नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान

वीरगंज

दिनांक २७-२-९७ (नेपाल)

www.bhojpurisahityangan.com

# विषय सूची


| क्र. सं. | कविता | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. | कविता | १ |
| २. | एगो दोसर अभिमन्यू | ३ |
| ३. | जिनिगी | ४ |
| ४. | बसन्त इहाँ आ ना सकल ! | ५ |
| ५. | अवगे सुरज उदाईल बा | ७ |
| ६. | सम्पत्ति | ८ |
| ७. | झापाली शहीद के याद में | ९ |
| ८. | काजर | १० |
| ९. | का रहे (?) | ११ |
| १०. | का कहीं (?) | १२ |
| ११. | कहाँ बाडू (?) | १३ |
| १२. | देवता | १५ |
| १३. | अलग पहिचान | १७ |
| १४. | आग सुलग रहल बा | १९ |
| १५. | कर्त्तव्य | २० |
| १६. | प्रेम | २१ |
| १७ | याद | २२ |


www.bhojpurisahityangan.com

# कविता

ए कवि जी !
कविता दीं !
कहाँ से कविता दीं । कवन कविता दीं ॥

रउआ
खोजे खातिर कहेनी,
कविता कहाँ बा ?
रिक्सा चलावे वाला के टिबिआह खुन में,
दुपहरिया घाम में
फाटल बेवाय वाला गोड़ में
कि / गरम अलकतरा मे ।
कहाँ बा कविता ?
मजदूर के पसेना लटपटाइल बा,
भूख, त्रास, गरीबी के कौर में सउनाइल बा
किसान के हाथ मे पड़ल ठेला में लुकाइल बा
शायद
घूसी के खेत में
सरसो के रंग में
भावना के द्वन्द्व में/अझुराइल बा ।

दिन रात बरसाती बेंग अस टर्र टर्र कर के
पढ़वलन/लिखवलन



www.bhojpurisahityangan.com

आपन कमी पूरा कइलन 'बेटा' से ।
बेटा के बदलल रूप
बाप के घवाइल हृदय
संसार में अपमानित 'कर्म'
मास्टर जी के
जीवन भर के साधना में
शायद कविता अउँजीआइल बा ।

साँच कहीं त,
कविता
कागज के टुक्रा बनि के
मेहरारू के खीश के वेदी में
झोकाइल ।
आ
पूरान पेटी में
फेंकाइल बा ।
एकविजी कविता दीं ..... ।

www.bhojpurisahityangan.com

# एगो दोसर अभिमन्यू

हमहूँ
सीखले रहीं
माई के गर्भ मे
'चक्रव्युह' के
सातो दरबाजा तोड के भीतर घूसे के
बाहर निकले के ना !

आपन स्वार्थ खातिर
दुआरी पर/हर केंवारी पर
अगोरले बा आजो
कर्ण/द्रौण/जयद्रथ
बाकिर
हमार हौसला बुलन्द बा
भेद रहल बा आपन लक्ष्य
मर्माहत हमर शरीर
छितराए के नइखे चाहत ।

हमार चाह,
चक्रव्युह भेदन कर के
लौटे वाला
एगो दोसर अभिमन्यू के बा, ।
टूटल



www.bhojpurisahityangan.com

रथ के पहिया उठावत
आ/अंतिम लडाई तक लडे के बा।
ताकि/दुविया में जी सकें
न्याय / अन्याय पर विजय बन के।

# जिनिगी

मरद के व्यवहार से
क्रुद्ध हो के एक जनी
ऊँच घर के छत से
कूदे खातिर
सुरफुरात रहली
तवे
पाछा से
एगो छोट लईका
आँचर के कोरि
पकडत
तोतलात
बोल
पडल
' माई '

www.bhojpurisahityangan.com

# बसन्त इहाँ आ ना सकल !

गृष्म के धाह से
गरमाइल ई धरती
सावन के रीमझीम सें
ठंडा ना सकल,
अनवरत
शरद प्रयासरत बा,
आश वसन्त के
परन्तु
गाछ बिरिछ
इहाँ मोजरा ना सकल !
कोइलर कूक ना सकल
वसन्त इहाँ आ ना सकल ।

अधिकरण खातिर जमिन छिनाते बा
चारो तरफ काँटादार घेरावा लागते बा
माली हर सम्भव कोशिश कर ता,
वाकिर तवो ई मौसम जरते बा !
कंचनार वन लोभा ना सकल
इहाँ वसन्त आ ना सकल !

जीये खातिर त
के नइखे जीयत



www.bhojpurisahityangan.com

सभे जीयता
उधार के खुशी ले के
अनचाह मुस्कान पर
बाकिर वासन्ती हवा के झोंका
इहाँ लहरा ना सकल !
ओहि से/वसन्त इहाँ आ ना सकल !

सबलता/दुर्वलता के
मन पारत/भोर पारत
फगुनहट में राग/द्वेष के उडावत
गर में गर मिलावत
रंग में रंगत/रंगावत
लोग - होरी गा रहल बा
ढोल/झाल वाज रहल बा ।
बाकिर
गुलावी गुलाल छिटा ना सकल
ओहि से,
वसन्त इहाँ आ ना सकल ।

www.bhojpurisahityangan.com

# "अबगे सुरज उदाईल बा"

डिबिया ले के अब मत ढुँडी
कही का राउर भुलाइल बा
सब दुःखियन के एक सहारा
अवगे सूरज उदाइल बा ॥१॥

पुष माघके कठूआइल देहिया
चैत्र, वैशाखमे गरमाइल बा
वादल, पानी साथे ले के
देखीं सूरज आइल बा ॥२॥

हाथके ना तोप्लासे तोपाइ
गांव गाँव किरण छितराइल बा
गछिअन के अब का भरोसा
देखीं सूरज उदाइल बा ॥३॥

परि कठिनाइ झोकरी गाछी
ना फल बा ना पत्ता बा
खोजलासे ना मिली सहारा
साथ देवे, सूरज आइल बा ॥४॥

हुक्का, लोटा, मवेसी, मकान
सवकर आस ओकरे बा
छाँव, छहारी, खेत भकारी
सबके चाह सूरजवे बा ॥५॥

बहुत दिनसे कइल प्रतिज्ञा
पूरा होखे आइल बा
अन्हार रात के चिरत सूरुजवा
देखीं पूरुव उदाइल बा ॥६॥



www.bhojpurisahityangan.com

# सम्पत्ति

रूपैया के मोटरी पकड़ले
खडियाइल बेटा,
प्रेम, स्नेह आ ममता
टुकुर-टुकुर ताक रहल बा ।

आलिशान महल
झूके नइखे पावत/वश में नइखे,
तिजोरी में
हाथ पहुँचे नइखे पावत/बेमरतियाह बा,
चाभी के गुच्छा
सिरहानी तर दबाइल बा,
जीवन जीये के लालसा
विटोरले
ताक रहल बा/छटपटा रहल बा
चारो ओर/आखिर
निस्सहाय बन के !
सम्पत्ति के
निहार रहल बा
बेचारा
सम्पत्ति ।

www.bhojpurisahityangan.com

# झापाली शहीद के याद में

ढेर लोग आइल
ढेर लोग आवत बा
उहे राह
तूंहो अइल हऽका ?

हमार प्रिय
सुखानी के जगल हो के
लाल-लाल धब्बा
देखल हऽका ?

अब त
पानीयो से खङ्राइल होई,
टोवल हऽका
ऊ धरती के ?
गरम
लागल होई ?

ऊ गाछ बा या कटाइल
जेमे उनुका के चउर के बन्हलो पर,
मुड़ी ना झुकवलें
ऊ नदिया
पार कइले होखबऽ
गुनगुनात कुछ समाद भेजले होई ?



www.bhojpurisahityangan.com

कहना ए कवि !
उहाँ के पत्थर रोअत रहे ?
काहे ना रो ओ,
इहाँ उनकर दोस्त, यारन के
हँसी मजाक से सँवास नइखे ।

# काजर

गोरी के
आँखिया में
शोभेला नीक,

बबुआ के
गलवा पर
लागेला ठीक !

बाकिर
कहूँ कतो
कुजगता लागल
त
हो जाला
काजर
गर के घेघ ।



www.bhojpurisahityangan.com

# का रहे (?)

एगो साउण्ड प्रुफ
शीशे-शीशा से घेरल कोठरी में
एगो
वक्ता
बोलत रहे/बाहर थपड़ी बाजत रहे
नयाँ चेहरा
पुराना के ओर ताकत
चिहाइल/भकुवाइल
दूराह पर
ओझराइल रहे !

सच्चाई !
आहा ! ठीक ! ठीक !!
बहुत बढियाँ मे
भुलाइल रहे ।

आखिर
वक्ता
का बोलत रहे ? का कहत रहे ?
का करत रहे ?
अन्त/अन्त तक
पता ना चलल
का रहे (?)



www.bhojpurisahityangan.com

# का कहीं (?)

ससार के रूप कहीं
या प्रकृत्तिके रंग कहीं ।
कही तोके मृगलोचनी
कि दिल के तरंग कहीं ॥

क्षितिज के विस्तार
आ कि कविता के भाव ।
वुद्धि के हथियार
आ कि प्रेम अभाव ॥
कह ! हे मन के मोहनी
तो के हम का कहीं (?)

गीतन के राग अलाप
आ कि शायरी के शेर ।
वीणा के झंकार,
आ कि दुःख हथफेर ॥
कह ! हे हमर जिनिगी
तो के हम का कहीं (?)

घुँघरू के छम-छम,
कि पायल के छन-छन ।
ओठ के चम-चम लाली,
कि श्रृंगार के ठन-ठन
कह हे हमर मानिनी
तो के हम का कहीं ?



www.bhojpurisahityangan.com

# कहाँ बाड़ू (?)

कविता !
तूँ कहाँ बाड़ू ?

पहाड के झरना में खोजनी
खाई में खोजनी
नदी के चंचल धार मे खोजनी !

सुनले रहीं -
तूँ सुन्दर/निर्मल होलू
यौवना के रूप रंग
प्रिय-प्रेयसी के
प्रेमालाप/आ
कोइली के कूक संगे
वसन्त विहार करेलू !

हम
पपिहरा
पीहू-पीहू, बोलत
उहे वसन्त के टोइया रहल बानी
लंगटे उधारे
हिमालय के सुन्दरता
खुला आकाशका नीचे
खडियाइल निहार रहल बानी !
प्रतीक्षारत हो के ।



www.bhojpurisahityangan.com

कलाकार के
कुची/रंग में
संगीतकार के
संगीतके तरंग में
अस्तित्व/विसंगति के बीच
जीवन-नृत्य के
छन-छन में
मदहोश
कविता !
हम
तोहरा के
लम्वाई/चौडाई
या घनत्व बोध में
केवल चिन्हे के नइखीं चाहत,

तू
एक बेर
हमरा लगे आ के देखऽ
हम
तोहरा के
जीवन के तरलता ही ना
जीवन के
ठोस अनुभूति
देवे के चाहऽ तानी ।

www.bhojpurisahityangan.com

# देवता

निराकार
ओमकार या
पत्थर के बनल
कवनो सुन्नर मूर्ती !
का ह देवता ?
कहीं
देवता का ह ?
राम / कृष्ण / ईशा / या पैगम्बर
चन्दन / तुलसी / मठ-मंदिर या
चर्च / मस्जिद ?

देवता का ह ?
पोङ्गा पंडित
नापाक इमाम
रउवे कहीं ।
जब ईश्वर
सर्व व्यापी
अजर / अमर हउवें ।
घट-घट में
विराजेलें
तब
कोई



www.bhojpurisahityangan.com

काहे जाला
मक्का मदिना
बनारस/बद्रीधाम
पशुपतिनाथ ?

अपना ला कइल
जब कर्म, आ
उहे दोसरा ला
कइला बाधर्म
हो जाला
तब, काहे खुलल बा
धर्म के पाठशाला ?

हमरा त बुझाता कि
देवता
लोग के
विचार हो गइल बा
आ
विचार के,
लकवा मार देले बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

# अलग पहिचान

तूँ वीर पुत्र कुंवर के
हम पुत्र अमर सिह के ।
तूँ धरती ब्रह्मपुत्र के
हम बाल गोपाल हिमाल के ॥

दूत हम शान्ति के,
दूर भ्रम भ्रान्ति के ।
तू ज्ञान वाटिका बाडऽ
बोध वट वृक्ष के ॥

हम चाह ज्ञान पुंज के,
ऋषि याज्ञवल्क्य के ।
तूँ शिष्य वाल्मीकि के
दीन दुःखी के सागर ।

हम त भूखा प्रेम के
सनाइल हम नेह में ।
क्रोध परशुराम के
त्याग देह दधिच के ॥

तूँ गौरव रूप रंग में
विशाल जग विस्तार में ।
हम वीर योद्धा विश्व के
स्वतन्त्र अलग पहिचान में ॥

अलग-अलग रूम मे
फरक-फरक रंग मे ।



www.bhojpurisahityangan.com

हम माल एक घेंट के,
सौन्दर्य एक साथ में ॥
छोट मोट पइन सें,
विशाल हिम-नद तक ।
ममत्व गोद हिमाल कें,
जग सारा सिंचत रहल ॥
ज्ञान सिख अडान के,
ना अहं विश्व उच्च के ।
शान्ति के द्वार ई
ॐ के आधार ह ॥
ई मार्ग धर्मराज कें
सुकर्म योग साध कें ।
दुसकर्म से दूर हटल
अलग पहिचान हमार वा ॥
नेपाल नेपाली शान से,
विश्व भ्रातृत्व ज्ञान से ।
प्रेम रस वाँटते,
रहत अलग पहिचान से ॥

www.bhojpurisahityangan.com

# आग सुलग रहल बा

जीवन के
टेंढ मेंढ राह में
चुपचाप
चलत रहब
तबो
अभावे अभाव के
जन्मावल असंतोष के
दाँते अंगुली काट के
लुकइबऽ
तबो
बाहर
विवश लोराइल आँखिया
आखिर
एकान्त में
झर-झर
बहते बा।
चउकठ के बहरा
खोखली हँसी
हँस के का करबऽ
भीतरे भीतर त
आग
सुलग रहल बा।



www.bhojpurisahityangan.com

# कर्त्तव्य

मल्लाह
नदी के धार में
गुम-सुम
आपन विछावल जाल का ओरि
ताकत रहे,
आहार के
खोज में
अण्डा/बच्चा के
साथ में आइल महतारी (मछरी)
जाल में
छटपटात रली
मन परल -
घर में ओकर जनी
खाली छिपा पटकत
लइकन के वीच
चिचियात
होइहें ।



www.bhojpurisahityangan.com

# प्रेम

जबले
बुझाइल ना रहे,
लिखनी / बहुत 'लिखनी',

सभा में
कइनी प्रेम पर भाषण
लोग
तालियो बजावल,
बुझाइल
हम
प्रेमपी हो गइल बानी,

आ जब से
बुझाए लागल
तनिका तनिका
त
लिखल बन्द हो गइल
ओठ सिआ गइल,
बुझा गइल
' प्रेम ' ।

www.bhojpurisahityangan.com

# याद

याद कवनो
रंग ना ह
कि
छूट जाई
मल-मल के नहइला पर ।

याद
त
उ परछाई ह
आदमी के
जवन
मिंट ना पावे जिनिगी में ।
विना
चिता पर
गइले ।

www.bhojpurisahityangan.com

नाम :- विश्वम्भर कुमार शर्मा

पिता :- श्री परशुराम शर्मा

माता :- श्रीमती सुमित्रा देवी

जन्म मितिः- २०१७/०२/०४

संप्रति :- उप-प्राध्यापक
ठाकुर राम बहुमुखी क्याम्पस, वीरगंज ।

प्रकाशित कृति :- मातृभाषाका चारपात, ऐच्छिक नेपाली २००,व्याकरण साहित्य र अभिव्यक्ति, सरल नेपाली व्याकरण, विभिन्न पत्र-पत्रिकामा समीक्षा, लेख प्रकाशित ।

अनुसंधान :- 'नेपाल में भोजपुरी साहित्य' शीर्षक में विद्यावारिधि के शोधार्थी ।